रस–निरूपण

रस संस्कृत साहित्य का अत्यन्त प्राचीन शब्द है। इसका प्रयोग वैदिक संहिताओं में भी हुआ है। रस के विषय में जितना सूक्ष्म चिन्तन भारतीय काव्यशास्त्रियों ने किया है उतना किसी अन्य देश में नहीं हुआ है। रस सिद्धान्त जहाँ एक ओर भारतीय मेधा के उत्कर्ष और भारतीय चिंतकों के मानव–मन सम्बन्धी गहन अनुशीलन का परिचायक है वहाँ दूसरीओर भारतीय आचार्यों की सौन्दर्य शास्त्र विषयक धारणाओं का भी परिचायक है।

काव्यशास्त्रियों ने रस को काव्य की आत्मा माना है। अन्य समस्त काव्या , रीति, गुण, अलंकार, ध्वनि आदि की महत्ता प्रतिपादित की गई। तथापि किसी ने भी इस की उपेक्षा नहीं की है। ध्वनिवादी रस ध्वनि को प्रमुख मानते हैं।

आचार्य मम्मट ने काव्य स्वरूप को 'सगुणौ' कहकर रस की ओर संकेत किया है।

साहित्यदर्पणकार ने तो स्पष्ट रूप से **'वाक्यं रसात्मकं काव्यं'** कहकर रस की प्रधानता घोषित की है।

रस–स्वरूप

नाट्यशास्त्र के रचयिता भरतमुनि रस–सिद्धान्त के प्रवर्तक माने जाते हैं। रस–स्वरूप तथा रसानुभूति का सर्वप्रथम विवेचन आचार्य भरतमुनि ने

किया है। भरतमुनि के अनुसार काव्य में रस के बिना किसी अर्थ का प्रवर्तन नहीं होता,

'न हि रसा दृते कश्चिदर्थः प्रवर्तते।'[1]

भरतमुनि का रस–सूत्र इस प्रकार से है–

"विभावानुभावव्यभिचारी संयोगाद्ररसनिष्पत्ति"[2]

अर्थात् विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है व्याकरण के अनुसार रस पद की व्युत्पत्ति चार प्रकार से मानी जाती है–

1. **रस्यते आस्वाद्यते इति रसः।**
2. **रस्यते अनेन इति रसः।**
3. **रसति रसयति वा रसः।**
4. **रसन रसः आस्वादः।**

भरतमुनि के रस सूत्र के अनुसार विभाव अनुभाव और व्यभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है जिसके अनुसार रस के अन्तर्गत विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी तथा स्थायी भाव के विषय में संस्कृत काव्यशास्त्रियों ने व्यापक विचार किया है।

विभाव

विभाव का शाब्दिक अर्थ 'कारण' है। सरल शब्दों में ये रस को व्यक्त करने के कारण है।

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार लोक में पदार्थ सामाजिक के हृदय में वासना रूप में स्थित रति, उत्साह, शोक आदि भावों के उद्बोधक कारण हैं, वे काव्य, नाटकादि में वर्णित होने पर विभाव कहलाते हैं।

'रत्याद्युद्बोधका लोके विभावाः काव्यनाट्ययोः।'[3]

इसके दो भेद हैं– 1. आलम्बन विभाव 2. उद्दीपन विभाव

1. आलम्बन विभाव

आचार्य **विश्वनाथ** के अनुसार, नायक, नायिका आदि पात्र आलम्बन विभाव कहलाते हैं क्योंकि उनके आलम्बन से ही रस का उद्गम होता है–

'आलम्बन' नायकादिस्तमालम्बय रसोदगमात्।'[4]

2. उद्दीपन विभाव

रस को उद्दीप्त या तीव्र करने वाले विभाव को उद्दीपन कहते हैं। विश्वनाथ के अनुसार नायक नायिकादि की विविध चेष्टायें आभूषण, वस्त्र एवं देशकाल आदि उद्दीपन के अन्तर्गत आते हैं–

उद्दीपन विभावास्ते रस मुद्दीपयन्ति ये।
आलम्बनस्य चेष्टाद्या देशकालादयस्तथा।।[5]

अनुभाव

जिस प्रकार कारण के पीछे कार्य होता है उसी प्रकार विभाव के पीछे अनुभाव होते हैं–

'अनुपश्चाद्भवन्तीति अनुभावाः।।'[6]

भरतमुनि के अनुसार– 'वाचिक, आंि क' तथा उपांगों के अभिनय से सम्बद्ध रहने के कारण इसे अनुभाव कहते हैं।

वाग ाभिनयेनेह यतस्त्वर्थोऽनुभाव्यते।

शाखा पा संयुक्तस्त्वनुभावस्ततः स्मृतः।।[7]

व्यभिचारी भाव

व्यभिचारी भाव स्थिर रहने वाली चित्तवृतियाँ हैं। ये भाव विविध प्रकार से रसों की ओर उन्मुख होकर संचरणशील होते हैं। अतः इन्हें स चारीभाव भी कहते हैं। एक रस में अनेक व्यभिचारी भावों तथा एक व्यभिचारी भाव की अनेक रसों में स्थिति हो जाती है। रसों के प्रति विविध प्रकार से संचरित होने वाले इन विकारों को व्यभिचारी–भाव कहा जाता है–

विविधामाभिमुख्येन रसेषु चरन्तीति व्यभिचारिणः।[8]

स्थायी भाव

जिसे अनूकल अथवा प्रतिकूल भाव न तो अपने में छिपा सकते हैं और न दबा सकते हैं तथा जो रस में प्रारम्भ से अन्त तक विराजमानरहता है, वही स्थायी भाव है–

अविरूद्धा विरूद्धा वा यं तिरोधातुमक्षमाः।

आस्वादङ्कुरकन्दोऽसौ भावः स्थायीति संमतः।।[9]

रसों की संख्या

रसों की संख्या के विषय में आचार्यों में मतभेद है। कुछ आचार्य आठ, कुछ नौ और कुछ रस संख्या दस मानते हैं। भरतमुनि एवं दशरूपककार ने काव्योपयोगी आठ रस माने हैं तथा अन्य काव्यों में 'शान्त रस' को स्वीकार कर नौ रस मानते हैं,जो निम्नलिखित हैं–

रसों के नाम	**स्थायी भाव**
शृ र	रति
हास्य	हास
करूण	शोक
वीर	उत्साह
रौद्र	क्रोध
भयानक	भय
बीभत्स	घृणा
अद्भुत	विस्मय
शान्त	निर्वेद

सुन्दरकाण्ड में रसाभिव्य जना

शृ ार रस

शृ र रस की अनुभूति उभयपक्षीय होती है अर्थात् नायक और नायिका दोनों का परितोष चित्त प्रसादन ही इस रस का परिपाक समझा गया है। शृ र रस के अधिष्ठाता विष्णु हैं और विष्णु में व्यापनशीलता ही

उसे उभयपक्ष को समान रूप से आ ादित करने की क्षमता प्रदान करती है।

श्‍ृ र रस के दो भेद हैं–1. सम्भोग श्‍ृंगार 2. विप्रलम्भ श्‍ृ र

दर्शनस्पर्शनादीनि निषेवेते विलासिनौ।
यत्रानुरक्तावन्योन्यं संभोगोऽयमुदाहृतः।।[10]

अर्थात् जहाँ परस्पर अनुरक्त भोग की लालसा वाले दम्पति दर्शन, स्पर्शन आदि करते हैं,उसे सम्भोग श्‍ृ र कहा गया है।

सुन्दरकाण्ड में सम्भोग श्‍ृ र का मनोहारी चित्रण देखा जा सकता है। हनुमान् द्वारा ल में सुन्दरी स्त्रियों की गति–हर्ष–प्रेम आदि देखे जाने का दृश्य।

संयोग श्‍ृ र

यह सम्भोग श्‍ृ र रस से ध्वनित है जिसका स्थायी भाव 'रति' है।

ततो वरार्हाः सुविशुद्धभावा
स्तेषां स्रियस्तत्र महानुभावाः।
प्रियेषु पानेषु च सक्तभावा
ददर्श तारा इव सुखभावाः।।[11]

आलम्बन – रमणियाँ
उद्दीपन – सौन्दर्य लावण्यादि दर्शन
अनुभाव – मन का प्रियतम तथा मधुपान में आसक्त होना
संचारीभाव – हर्ष, स्पर्श व मद।

विप्रलम्भ शृ ार

प्रस्तुत श्लोक में अपने प्रियतम श्री राम के विरह में सीता की वियोग अवस्था का चित्रण है जिसमें प्रवास हेतुक विप्रलम्भ शृ र रस का स्थान है जिसका स्थायी भाव 'रति' है।

प्रसक्ताश्रृमुखी त्वेवं ब्रुवती जनकात्मजा।
अधोगतमुखीबाला विलप्तुमुपचक्रमे।
उन्मत्तेव प्रमत्तेव भ्रान्तचित्तेव शोचती।
उपावृत्ता किशोरीव विचेष्टन्ती महीतले।।[12]

आलम्बन	–	श्रीराम (नायक)
उद्दीपन	–	सीताकाविलापादि दर्शन
अनुभाव	–	अश्रुधारा, प्रवाहित होना, धरती पर लोटना, छट–पटाना, पागलों कासा प्रलाप करना आदि।
संचारी भाव	–	चिन्ता, शोक, उद्वेग।

हास्य रस

आचार्य **विश्वनाथ** के अनुसार हास्य रस का लक्षण इस प्रकार है।

विकृताकारवाग्वेषचेष्टादेः कुहकाभ्दवेत्।
हास्यो हासस्थायिभावः श्वेतः प्रमथ दैवतः।।[13]

अर्थात् किसी किसी के अ , वचन, वेशभूषा, आभूषणादि में विकृति के दिखलाई देने पर अथवासुने जाने पर भी उत्पन्न विकास (खिल जाना) नामक चित्त वृत्ति हास के नाम से जानी जाती है जो हास रस का पोषण

करती है।

सुन्दरकाण्ड में मधुवन में वानरादि समूह के वैचित्र्य नाटकीय भाव–विहंगमाये तथा चेष्टादि से हास स्थायी भाव से हास रस का प्रस्फुटन होता है।

गायन्ति केचित् प्रहसन्ति केचि–
नृत्यन्ति केचित् प्रणमन्ति केचित्।
पतन्ति केचित् प्रचरन्ति केचित्
पवन्ति केचित् प्रलपन्ति केचित्।।[14]

आलम्बन	–	वानरादि समूह
उद्दीपन	–	विविध चेष्टाओं का दर्शनादि होना
अनुभाव	–	प्रसन्नता एवं मुखादि प्रफुल्लित होना
संचारी भाव	–	चपलता, हर्ष।

करूण रस

साहित्यदर्पणकार आचार्य **विश्वनाथ** के अनुसार करूण रस का लक्षण इस प्रकार है–

इष्टनाशादनिष्टाप्तेः करूणाख्यो रसो भवेत्।
धीरै–कपोतवर्णोऽयं कथितो यमदैवतः।।
शोकोऽत्र स्थायिभावः स्याच्छोच्यमालम्बनं मतम्
तस्य दाहादिकाव्स्था भवेदुद्दीपनं पुनः।।
अनुभावा दैवनिन्दाभूपातकन्दितादयः।
वेवर्ण्योच्छ्वासनिः श्वासस्तम्भप्रलपनानि च।।

निर्वेदमोहापस्मारव्याधिग्लानिस्मृतिश्रमाः।
विषादजड़तोन्मादचिन्ताद्या व्यभिचारिणः।।[15]

अर्थात् इष्ट के कारण और अनिष्ट की प्राप्ति से करूण रस उत्पन्न होता है। इसका कपोत वर्ण है। इसका देवता यमराज है, इसमें स्थायी भाव शोक होता है और विनष्ट बन्धु आदि शोचनीय व्यक्ति आलम्बन विभाव होते हैं। प्रारम्भ की निन्दा, भूमिपतन, रोदन, विवर्णता, उच्छवास, निःश्वास, स्तम्भ और प्रलाप इस रस में अनुभाव होते हैं। निर्वेद, विवर्णता, मोह, अपस्मार, व्याधि, ग्लानि, स्मृति, श्रम, विषाद, जड़ता, उन्माद और चिन्ता आदि इसके संचारी भाव हैं।

सुन्दरकाण्ड में अनिष्ट प्राप्ति की आशंका अर्थात् जनकनन्दिनी सीता के प्राण त्यागने की आशंका से व्याकुल होकर शोकाग्रस्त हो रहे हैं जिसमें 'शोक' स्थायी भाव होने के कारण करूण रस प्रकट हो रहा है।

प्रसक्तश्रुमुखी त्वेवं ब्रुवती जनकात्मजा।
अधोगतमुखी बाला विलप्तुमुपचक्रमे
उन्मत्तेव प्रमत्तेव भ्रान्तचित्तेव शोचती।
उपावृत्ता किशोरीव विचेष्टन्ती महीतले।[16]

आलम्बन	–	जनकनन्दिनी सीता
उद्दीपन	–	सीता के अनिष्ट होने की आशंकादि विचार
अनुभाव	–	हनुमान् द्वारा हा राम! हो लक्ष्मण! हा अयोध्या! आर्तस्वर में पुकारना। विलाप करना।
संचारी भाव	–	विषाद, त्रासादि, दैन्य

वीर रस

आचार्य **विश्वनाथ** ने साहित्यदर्पण में वीर रस का लक्षण इदस प्रकार दिया है–

> **उत्तमप्रकृतिर्वीरउत्साहस्थायिभावकः।**
> **महेन्द्रदैवतो हेमवर्णोऽयं समुदाहृतः।।**
> **आलम्बनविभावास्तु विजेतव्यादयो मताः।**
> **विजेतव्यादिचेष्टाद्यास्तस्योद्दीपन रूपिणः।**
> **अनुभावास्तु त़त्र स्युः सहायान्वेषणादयः।।**[17]

अर्थात् उत्तम पात्र में आश्रित 'वीर–रस' होता हैं इसका स्थायी भाव उत्साह, देवता महेन्द्र और वर्ण स्वर्ण के सदृश होता है। इसमें जीतने योग्य आलम्बन होते हैं और उनकी चेष्टाएँ उद्दीपन विभाव होती है। युद्ध के सहायक अन्वेषण आदि इसके अनुभाव हैं। धैर्य, मति, गर्व, स्मृति, तर्क, रोमांच, आदि इसके संचारी भाव हैं।

सुन्दरकाण्ड में श्रीराम एवं लक्ष्मण की अपूर्व पुरुषार्थ का वर्णन हनुमान् द्वारा सीता के प्रति किया गया है जिससे उत्साह स्थायी भाव है।

> **रामादृ विशिष्टः कोऽन्योऽस्तिकश्चित् सौमित्रिणा समः**
> **अग्निमारूतकल्पौ तौ भ्रातरौ तब संश्रयौ।।**[18]

आलम्बन	–	श्रीराम तथा लक्ष्मण
उद्दीपन	–	श्रीराम को अग्नि, लक्ष्मण को वायु के तुल्य तेजस्वी
अनुभाव	–	सीता को चिन्ता नहीं
व्यभिचारी भाव–		शौर्य

रौद्र रस

आचार्य **विश्वनाथ** ने 'रौद्र–रस' का लक्षण इस प्रकार दिया है–

रौद्र–क्रोधस्थायिभावो रक्तो रूदाधि दैवतः।
आलम्बनमरिस्तस्य तच्चेष्टोद्दीपनं मतम्।।
मुष्टिप्रहारपातन विकृतच्छेदाविदारणैश्चैव।
संग्राम संभ्रमाद्यैरस्योद्दीप्तिर्भवेत् प्रौढा।।
भ्रू विभ ्गैष्ठनिर्दंशबाहुस्फोटनतर्जनाः।।
आत्मावदानकथनमायुधोत्क्षेपणानिच।।
अनुभावास्तथा क्षेपकू रसंदर्शनादयः।
उग्रतावेगरोमा चस्वेदेवेपथवो मदः।।
मोहामषदियस्तत्र भावाः स्युर्व्यभिचारिणः।[19]

अर्थात् रौद्र रस का स्थायी भाव क्रोध है। इसका वर्ण लाल और रूद्र देवता है। इसमें शत्रु आलम्बन विभाव है। उसकी चेष्टायें उद्दीपन विभाव मानी गई हैं। मुष्टिप्रहार, आक्रमण अथवा गिराना, विरुद्ध चरण, काटना, भेदन करना तथा युद्ध की व्यग्रता आदि से इसकी अतिशय उद्दीप्ति होती है। भ्रकुटिभ , ओष्ठ दंशन, भुजाओं को फैलाना, तर्जन करना, अपने किये हुये वीर कर्मों की प्रशंसा करना और अस्त्रों का प्रहार करना तथा तिरस्कार, क्रूर दृष्टि से देखना आदि अनुभाव हैं। उग्रता, आवेश, रोमांच, स्वेद, कम्पन, मोह, मद अमर्षादि भाव व्यभिचारी भाव होते हैं।

सुन्दरकाण्ड में कौआ (जयंत) द्वारा माता जानकी के वक्षस्थल पर आघात करने जैसी अमर्यादित कर्म करनेके कारण स्वरूप श्री राम के हृदय

में प्रचण्ड रोष उम्पन्न हुआ, जिसका स्थायी भाव क्रोध है।

नरवाग्रैः केन ते भीरू दारितं वै स्तनान्तरम्

कः क्रीऽति सरोषेण प चवक्त्रेण भोगिना।[20]

आलम्बन – कौआ (जयंत)

उद्दीपन – उसका दुःस्साहादि दर्शन

अनुभाव – श्रीराम के कटुवचनादि

संचारी भाव – उग्रता।

भयानक रस

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार इसका स्थायी भाव भय है, देवता यमराज तथा श्यामवर्ण है। इसमें जिससे भय उत्पन्न होता है, वह आलम्बन तथा उसकी अत्यन्त भीषण चेष्टाएँ उद्दीपन तथा विर्वणता, गदगद स्वर से भाषण, नष्ट चेष्टा, स्वेद रोमांच कम्प और इधर–उधर कातर सी दृष्टि डालना आदि अनुभाव हैं। जुगुप्सा, आवेग, सम्मोह, सन्त्रास, ग्लानि, दीनता, श , अपस्मार, मृत्यु आदि व्यभिचारी भाव है।

भयानकको भयस्था यिभावो कालाधिदैवतः।

स्त्रीनिचिप्रकृतिः कृष्णो मतस्तत्व विशारदैः।।[21]

सुन्दरकाण्ड में श्री हनुमान् के स्वरूप अवस्था को देखकर सीता जी के हृदय में 'भय' नामक स्थायी भाव जाग्रत हुआ जो भयानक रस का हेतु है।

अहो भीममिदं सत्त्वं वानरस्य दुरासदम्।

दुर्निरीक्ष्यमिदं मत्वा पुनरेव मुमोह सा।।[22]

आलम्बन – श्री हनुमान

उद्दीपन – हनुमान् का विकट स्वरूप तथा सीता की

चिन्तावृत्ति वैकल्व्यता

अनुभाव – सीता का भयातुर होकर मूर्च्छित होना।

संचारी भाव – दैन्यता, चिन्ता।

बीभत्स रस

आचार्य **विश्वनाथ** ने 'बीभत्स रस' का लक्षण इस प्रकार दिया है–

जुगुप्सा स्थायिभावस्तु बीभत्सः कथ्यते रसः।
नीलवर्णो महाकालदैवतोऽयमुदाहृतः।।
दुर्गन्धमांसरूधिरमेदांस्यालम्बनं मतम्।
तत्रैव क्रमिपातद्यमुद्दीपनमुदाहृतम्।।
निष्ठीवनास्यवलननेत्रस ोचनादयः
अनुभावावास्तत्र मतास्तथा स्युर्व्यभिचारिणः
मोहोऽपस्मार आवेगो व्याधिश्च मरणादयः।[23]

अर्थात् इसका स्थायी भाव जुगुप्सा है। इसके देवता महाकाल तथा वर्ण नील है। दुर्गन्धित मांस, रूधिर और चर्बी आलम्बन रूप में हैं, उसमें कीड़े पड़ जाना आदि उद्दीपन विभाव है। थूकना, मुख फेर लेना, आँखों को बन्द कर लेना आदि अनुभाव माने गये हैं तथा मोह, अपस्मार, आवेग, व्याधि, मरणादि, व्यभिचारी भाव होते हैं।

सुन्दरकाण्ड में जुगुप्सा नाम स्थायी भाव है जिसमें कि सीता द्वारा ल ा की भूमि का वर्णन किया गया है–

चिताधूमाकुलपथा गृध्रमण्डलमण्डिता।
अचिरेणैव कालेन श्मशानसदृशी भवेत्।।[24]

आलम्बन – ल ापुरी

उद्दीपन – शमशान भूमि का आरोपादि दर्शन

अनुभाव – सड़कों पर चिता का धुआँ फैलना तथा गीध की जमात

संचारी भाव – उन्माद, त्रास।

अद्भुत रस

आचार्य **विश्वनाथ** ने 'अद्भुत–रस' का लक्षण इस प्रकार दिया है–

अद्भुतो विस्मयस्थायिभावो गन्धर्व दैवतः।
पीतवर्णो वस्तु लोकातिगमालम्बनं, मतम्।
गुणानां तस्य महिमा भवेदुद्दीपन पुनंः।।
स्तम्भः स्वेदोऽथ रोमा चगद्गद्स्वर संभृमाः।
तथा नेत्र विकासाद्या अनुभावाः प्रकीर्तिताः।।
वितर्कावेगसंभ्रान्तिहर्षाद्या व्यभिचारिणः।[25]

अर्थात् इसका स्थायी भाव विस्मय है। इसके देवता गन्धर्व तथा वर्ण पीत है। अलौकिक वस्तु आलम्बन विभाव मानी गई हैं, उसके गुणों की महिमा उद्दीपन विभाव होती है। स्तम्भ, स्वेद, रोमांच, गद्गद् स्वर, सम्भ्रम तथा नेत्र विकासादि अनुभाव कहे गये हं। वितर्क, आवेग, सम्भ्रान्ति हर्षादि व्यभिचारी भाव होते हैं।

सुन्दरकाण्ड में त्रिजटा द्वारा रोमांचकारी स्वप्न दर्शन करने से विस्मय स्थायी भाव जाग्रत हुआ है जिसमें रावण आदि का विनाश एवं सीता, राम के शुभ लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं।

स्वप्नों ह्यद्य मया दृष्टो दारूणो रोमहर्षणः।

राक्षसानामभावाय भर्तुरस्या भवाय च

एवं मुक्तास्त्रिजटया राक्षस्यः क्रोधमूर्च्छिताः।

सर्वा एवाब्रुवन् भीतास्त्रिजटां तामिदं वचः।।[26]

आलम्बन	–	स्वप्न
उद्दीपन	–	जिसमें राक्षसों का विनाश एवं सीतापति के अभ्युदय का दर्शन आदि।
अनुभाव	–	राक्षसियों का क्रोध से मूर्च्छित होना तथा भयभीत होना
संचारी भाव	–	त्रासादि

शान्त रस

भारतीय काव्यशास्त्रियों की शान्त रस के विषय में अवधारणा है कि सत्त्वगुणसम्पन्न पुरुष के हृदय में स्थित शम नामक स्थायी भाव ही आस्वादन योग्य होकर शान्त रस प्राप्त करता है। आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में शान्त रस का निरुपण करते हुये लिखा है–

शान्तः शमस्थायिभाव उत्तमप्रकृतिर्मतः।

कुन्देन्दुसुन्दरच्छायः श्री नारायणदैवतः।।

अनित्यत्वादिनाऽशेषवस्तुनिः सारता तु या।

परमात्मस्वरूपं वा तस्यालम्बनमिष्यते।।

पुण्याश्रमहरिक्षेत्रतीर्थरम्य वनादयः।

महापुरूषस द्यास्तस्योद्दीपनरूपिणः।।

रोमांचाद्याश्चानुभावास्तथा स्युर्व्यभिचारिणः।

निर्वेदहर्षस्मरणमतिभूतदयादयः।।[27]

अर्थात् शान्त रस का स्थायी भाव शम है। शान्त रस का आश्रय उत्तम–पात्र, वर्ण कुन्द पुण्यवत् तथा चन्द्रादि वत शुक्ल है और देवता भगवान श्री नारायण हैं। अनित्य त्वादि के कारण सम्पूर्ण पदार्थों की जो निस्सारता है अथवा परमात्मा स्वरूप उसका आलम्बन विभाव है पुण्याश्रम, हरिक्षेत्र तीर्थ, रमणीक वन आदि इसके उद्दीपन विभाव है। रोमांचादि अनुभाव है तथा निर्वेद, हर्ष, स्मरण, मति, प्राणियों पर दया आदि व्यभिचारी भाव होते हैं।

सुन्दरकाण्ड में हनुमान् के मंगलमय वचन को श्रवण कर सीता के मन में शान्ति का उदय हुआ है जिसमें निर्वेद स्थायी भाव है

ततो मया वाग्भिरदीनभाषिणी।
शिवाभिरिष्टाभिरभिप्रसादिता।।
उवाह शान्तिं मम मैथिलात्मजा।
तवातिशोकेन तथातिपीडिता।।[28]

आलम्बन – हनुमान
उद्दीपन – उनके प्रिय एवं मंगलमय वचन
अनुभाव – सीता के मन में शान्ति का संचार होना
संचारी भाव – दीनता, वितर्का

सन्दर्भ सूची

1. नाट्यशास्त्र षष्ठ अध्याय पृष्ठ – 228
2. नाट्यशास्त्र षष्ठ अध्याय पृष्ठ – 228
3. साहित्यदर्पण – तृतीय अध्याय पृष्ठ – 112
4. साहित्यदर्पण – तृतीय अध्याय पृष्ठ – 3/29
5. साहित्यदर्पण – तृतीय अध्याय पृष्ठ – 3/31,132
6. नाट्यशास्त्र, सप्तम अध्याय पृष्ठ – 375
7. नाट्यशास्त्र, सप्तम अध्याय पृष्ठ – 7/5
8. नाट्यशास्त्र, सप्तम अध्याय पृष्ठ – 390
9. साहित्यदर्पण – 3/174
10. साहित्यदर्पण – 3/210
11. सुन्दरकाण्ड – 5/17
12. सुन्दरकाण्ड – 26/1
13. साहित्यदर्पण – 2/4
14. सुन्दरकाण्ड – 61/16
15. साहित्यदर्पण – 3/222–225
16. सुन्दरकाण्ड – 26/1
17. साहित्यदर्पण – 3/232–233
18. सुन्दरकाण्ड – 39/53
19. साहित्यदर्पण – 3/227–230
20. सुन्दरकाण्ड – 7/8
21. साहित्यदर्पण – 3/235
22. सुन्दरकाण्ड – 32/4

23. साहित्यदर्पण — 3/239,240,241

24. सुन्दरकाण्ड — 26/24

25. साहित्यदर्पण — 3/242—244

26. सुन्दरकाण्ड — 27/6,7

27. साहित्यदर्पण — 3/245—248

28. सुन्दरकाण्ड — 68/29